Date -> 16.11.2017 -> KHABAR MANTRA

योग पूरी दुनिया के लिए भारत की महत्वपूर्ण देन : राष्ट्रपति

संवाददाता

रांची। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि आध्यात्म हमारे देश की आत्मा है जो पूरे विश्व के लिए भारत की एक महत्पूर्ण देन है। स्वामी विवेकानंद एवं परमहंस स्वामी योगानंद ने विश्व स्तर अध्यात्म को सम्मान दिलाया। ऐतिहासिक संयोग से, वर्ष 1893 में स्वामी विवेकानंद के शिकागो संबोधन ने भारतीय अध्यात्म के बारे में पश्चिम में जागृति की एक नई लहर पैदा की थी और इसी वर्ष गोरखपुर में परमहंस योगानन्द का मुकुन्द लाल घोष के नाम से अवतरण हुआ था। परमहंस योगानंद का संदेश अध्यात्म का संदेश है। वह धर्म से परे, सभी धर्मों का सम्मान करने का और विश्व बंधुत्व का नजरिया है। स्वामी जी मानते थे कि जिस तरह रोशनी, हवा और पानी सबके लिए है, उसी तरह ऋषि-मुनियों द्वारा विकसित किया गया भारत का योग विज्ञान भी पूरी मानवता के लिए है। गीता में भारत का यही योग शास्त्र श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में समझाया गया है।

योगदा आश्रम में स्वामी योगानंद की पुस्तक का लोकार्पण करते राष्ट्रपति

वे बुधवार को चुटिया स्थित योगदा सत्संग आश्रम में स्वामी योगानंद लिखित गॉड टॉक्स विद अर्जुन-दी भागवत गीता के हिंदी संस्करण ईश्वर अर्जुन संवाद पुस्तक के विमोचन पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि परमहंस योगानंद के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को कुरुक्षेत्र की अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी और इसे जीतना भी है। सही क्या है और गलत क्या है, क्या करे क्या ना करे यह अंतर्द्वंद सबको परेशान करता है। ऐसे दोराहों पर निर्णय लेने में विद्वता की नहीं बल्कि विवेक की आवश्यक्ता होती है। सही और गलत के बीच चुनाव करने का यह विवेक गीता में मिलता है। गीता पर अपनी टीका को परमहंस योगानन्द आत्म-साक्षात्कार का राजयोग विज्ञान कहते हैं। वे आत्म-साक्षात्कार को गीता का उद्देश्य मानते हैं तथा राजयोग इस उद्देश्य को प्राप्त करने की पद्धति है। स्वामी विवेकानंद और परमहंस योगानंद ने राजयोग पर विशेष जोर दिया था। राजयोग की वैज्ञानिकता के कारण पश्चिम के लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा। आज की युवा पीढ़ी के लिए भी राजयोग अधिक उपयुक्त लगता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इंडियाद्ध के द्वारा पूरे विश्व में निरंतर योगदान के सौ वर्ष पूरे होने पर मैं इस सोसाइटी बधाई देता हूं। इन सौ वर्षों में योगदा सत्संग सोसाइटी ने पूरे विश्व में भारत के योग विज्ञान को प्रसारित करने में सराहनीय योगदान दिया है। इस शताब्दी वर्ष में, गीता पर परमहंस जी की टीका के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन समयानुकूल है और उपयोगी भी। आज इस हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन द्वारा बहुत बड़े पाठक वर्ग के लिए इस पुस्तक में निहित जीवनोपयोगी ज्ञान सुलभ हो गया है। मेरा यह मानना है कि जो व्यक्ति गीता को अपने आचरण में ढ़ालेगा वह झंझावात में भी स्थिर, शांत और सक्रिय रहेगा। उन्होंने योगदा सत्संग के आश्रमों और ध्यान-केन्द्रों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, प्राकृतिक आपदाओं से आहत लोगों की सहायता, अनाथ बच्चों के लालन-पालन और कुष्ठ रोगियों की सेवा आदि क्षेत्रों में योगदान के लिए सराहना की। मौके पर राजपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुवर दास, स्वामी चिदानंद, स्वामी स्मरणानंद, स्वामी नित्यानंद, स्वामी विश्वानंद आदि मौजूद थे।

देश-विदेश से जुटे थे सैकड़ों साधक

कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों के अलावा अन्य देशों जैसे यूरोप, दक्षिण अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि से भी बड़ी संख्या में साधक उपस्थित थे।

मूल टीका का 1995 में हुआ था प्रकाशन : परमहंस योगानंद लिखित गॉड टॉक्स विद अर्जुन-दी भागवत गीता मूल अंग्रेजी टीका प्रकाशन 1995 में हुआ था। अब तक स्पैनिश, जर्मन, इटालियन और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध थे। स्वामी नित्यानंद के देखरेख में योगदासत्संग मठ के कई सन्यासियों ने पुस्तक का हिंदी अनुवाद में अपनी भूमिका निभायी। पुस्तक का नाम ईश्वर अर्जुन संवाद रखा गया।